सत् साहेब  सत् साहेब

जय बन्दी छोड़ की

KIS KIS KO MILE KABIR PARMATMA

Script :~

मैं रोवत हूं सृष्टि को, सृष्टि रोवै मोहे।
गरीबदास इस वियोग को, समझ ना सकता कोए।।
{ गुरु जी की आवाज }

दोस्तों क्या हम लोग ही भगवान को खोज रहे हैं या फिर भगवान भी हमें खोज रहा है?
यह बात आश्चर्यजनक जरूर है। लेकिन वह समरथ परमात्मा ऐसा भी करते हैं ताकि संसार में परमात्मा के प्रति आस्था जीवित रहे।
इसके लिए परमात्मा अपने बच्चों को तत्वज्ञान से परिचित कराने के लिए प्रत्येक युग में प्रकट होते हैं।
जिसका समर्थन हमारे सद्धग्रंथ भी करते हैं । कि वह परमात्मा प्रत्येक युग में प्रकट होकर मनुष्य की तरह एक जीवन व्यतीत करते है और अपनी आत्माओ को सत्य ज्ञान प्रदान करते है।

सतयुग में सत सुकृत कह टेरा, त्रेता नाम मुनींद्र मेरा ।
द्वापर में करुणामय कहाया, कलयुग नाम कबीर धराया ।।
{ गुरु जी की आवाज़ मे }

जी हां दोस्तों वह कबीर परमेश्वर ही है जो प्रत्येक युग में अलग-अलग नामों से प्रकट होते हैं और अपनी प्यारी हंस आत्माओं को सत मार्ग सत भक्ति देकर मोक्ष प्रदान करते हैं
तो दोस्तों आज हम चारों युगों की बात करेंगे और जानेंगे कि किस-किस पुण्य आत्मा को परमात्मा मिले :~
सबसे पहले बात करते हैं सतयुग की । सतयुग में परमेश्वर सत सुकृत के नाम से आए थे । और सबसे पहले ब्रहमा जी से मिले उनको तत्वज्ञान मे सृष्टि रचना का ज्ञान करवाया, जिससे वो काफी प्रभावित हुए और परमेश्वर के उस ज्ञान को अद्वितीय बताते हुए प्रथम मंत्र प्राप्त किया। परमेश्वर ने ब्रहमा तथा सावित्री जी को ओम मंत्र दिया ।
इसके पश्चात परमात्मा विष्णु जी के पास विष्णु लोक में गए। उनसे चर्चा की तथा विष्णु जी को शिष्य बनाया परमात्मा ने विष्णु जी व लक्ष्मी जी को हरियम मंत्र प्रथम मंत्र रूप में दिया इसके बाद परमात्मा शिव जी के पास शिवलोक में गए तथा शिवजी व पार्वती जी को सोहम नाम दिया।
दोस्तों वैसे तो सतयुग में मनु महर्षि जी को भी कबीर परमेश्वर ने जोकि उस समय सत सुकृत नाम से प्रकट हुए थे को तत्वज्ञान से परिचित करवाया , लेकिन उन्होंने परमेश्वर के ज्ञान को सत्य ने मानकर अपने द्वारा की जा रही भक्ति को ही श्रेष्ठ माना।

👉🏻दोस्तों सतयुग के बाद अब बात करते हैं त्रेतायुग की। त्रेता युग में कबीर परमेश्वर
मुनींद्र जी के नाम से प्रकट हुए थे।

दोस्तों रामायण मे नल नील का नाम तो आपने सुना ही होगा । ये दोनों मौसेरे भाई थे। और दोनों ही शारीरिक व मानसिक रोग से दुःखी थे । परमात्मा ने उनको आशिर्वाद मात्र से ठीक करके और सत्य ज्ञान का उपदेश देकर अपनी शरण में लिया।

इस युग मे परमात्मा लंका में रहने वाले चंद्र विजय भाट व उनकी पत्नी कर्मवती को भी मिले और उसके बाद रावण की पत्नी मंदोदरि जी और भाई विभीषण को ज्ञान समझाया। यही कारण था कि राक्षसों की नगरी में होने के बावजूद भी ये धर्म का पालन करने वाले थे। किंतु रावण अभिमानी था। जिस कारण उसने किसी की ना सुनी और अपना सर्वनाश करवाया ।
मुनींद्र ऋषि जी के रूप में परमात्मा हनुमान जी को मिले थे। जब उन्होंने सीता जी द्वारा दी गई सच्चे मोतियों को माला को यह कहकर तोड़ दिया कि इसमे मे राम का नाम नहीं है, तब सीता जी के कटु वचन कहने पर हनुमान जी ने अपना सीना चाक करके अपने अंदर लिखे राम नाम को दिखाकर अयोध्या को त्याग दिया था, उसके पश्चात मुनींद्र रूप में परमात्मा ने हनुमान जी को समझाया कि जिस रामचन्द्र जी की आप भक्ति करते हो वह परमेश्वर नही है। मुनिंद्र जी ने कहा कि में ही पूर्ण परमात्मा हुँ । तब हनुमान जी ने सत्य ज्ञान को स्वीकार किया । इसका प्रमाण पवित्र कबीर सागर हनुमान बोध में है।

👉🏻 द्वापर युग।.... दोस्तों त्रेता के बाद द्वापर युग आता है जिसमें परमेश्वर कबीर जी करूणामय नाम से प्रकट हुए थे उस समय एक वाल्मीक जाति में उत्पन्न भक्त सुदर्शन सुपच उनके शिष्य हुआ थे। इन्हीं सुदर्शन जी ने पाण्डवों की यज्ञ को सफल किया था। जो न तो श्री कृष्ण जी के भोजन करने से सफल हुई ओर न ही तेतीस करोड़ देवताओं, अठासी हजार ऋषियों,आदि के भोजन खाने से सफल हुई थी।

इस युग में परमेश्वर ने राजा चन्द्रविजय ओर उनकी पत्नी इन्द्रमती को भी सच्चा ज्ञान समझाया। जिससे उनका भी कल्याण हुआ।

दर्शको अब हम बात करते हैं कलयुग की। आज से ठीक 623 वर्ष पहले पूर्ण परमात्मा अपने वास्तविक कबीर देव नाम से प्रकट हुए तथा काशी मे नीरू नीमा नामक एक निसंतान दंपति को लहरतारा तालाब मे कमल के फूल पर मिले।
परमेश्वर कबीर जी ने रामानंद जी का शिष्य बन कर उनका उद्धार किया। स्वामी रामानंद जी अपने समय के सुप्रसिद्ध विद्वान कहे जाते थे। परमेश्वर कबीर साहिब जी ने उन्हें यथार्थता से परिचित करवा कर सतलोक के दर्शन कराएं।

उस समय गोरखनाथ जी ने भी कबीर साहिब जी के साथ ज्ञान गोष्टी की फिर सिद्धियों के बल पर परमात्मा की परीक्षा ली। जिसके बाद गोरखनाथ जी को विश्वास हो गया कि यह पूर्ण परमात्मा है या उनका अवतार है। अंततः परमेश्वर कबीर जी से सतनाम लेकर भक्ति की तथा सिद्धियां प्राप्त करने वाले साधना त्याग दी।

सिख धर्म के प्रवक्ता श्री नानक देव जी को भी पूर्ण परमात्मा कबीर साहिब मिले। गुरु नानक देव जी को परमात्मा बेइ नदी पर मिले। उनसे काफी देर तक ज्ञान चर्चा करने के बाद उन्हें सतलोक का दर्शन कराया तथा 3 दिन तक सतलोक की सैर करवा कर सत्य ज्ञान से परिचित कर वापस छोड़ा।

इसके अलावा गरीब दास जी महाराज जी को भी पूर्ण परमात्मा 10 वर्ष की आयु में जिंदा बाबा के रूप में मिले थे। उन्हें सतलोक सचखंड दिखाकर अपने अद्वितीय ज्ञान से अवगत कराया तथा अपनी महिमा की वाणी पुण्य प्रगट करवाई।

बांधवगढ़ के सेठ धनी धर्मदास जी जब 68 तीरथ की यात्रा पर निकले हुए थे तब पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब जी जिंदा बाबा के रूप में उनको मिले और कर्मकांड में उलझे धर्मदास जी को सत्य ज्ञान सत मार्ग बताकर सत भक्ति प्रदान की थी तथा सतलोक के दर्शन करवाए थे।

श्री दादू जी को भी परमात्मा 7 वर्ष की आयु में जिंदा बाबा जी के स्वरूप में ही मिले थे तथा उन्हें सतलोक ले जाकर यथार्थ सत्य ज्ञान से परिचित करवाया था।

राजस्थान के प्रसिद्ध सन्त दादू दयाल जी जब 7 वर्ष के थे तब भी परमेश्वर कबीर जी सशरीर प्रकट होकर उस पुण्यात्मा को ज्ञान समझाया ओर अपनी शरण में लियाऔर उनको भी अन्य पुण्यात्माओं की तरह परमेश्वर कबीर जी ने 3 दिन सतलोक दिखाया ।

कलयुग में ही श्री मलूक दास साहेब जी को पूर्ण परमात्मा मिले तथा दो
दिन तक सतलोक दिखाया तब तक श्री मलूक दास जी अचेत रहे।

बलख बुखारे के बादशाह अब्राहम सुल्तान अधम को कबीर परमेश्वर मिले और उनका राज पाट छुड़वाकर भक्ति मार्ग प्रदान कर उनका कल्याण किया।

मुसलमान धर्म के प्रवर्तक हजरत मोहम्मद जी को भी परमात्मा कबीर देव जिंदा महात्मा के रुप में मिले। और उनको सतलोक लेकर गए, लेकिन उनकी रुचि वहां रहने की नही हुई। कुरान में लिखे , कबीरन , खबीरन, कबीरा नाम ये वही संकेत करते हैं ।

राजस्थान के समराथल धोरा नामक स्थान पर परमेश्वर कबीर जी आदरणीय जम्भेश्वर जी को मिले। उनको सतलोक की महिमा सुनाई तथा भक्ति मार्ग देकर कल्याण किया।

दोस्तों कलयुग मे ओर भी अन्य महापुरुष हुए जिनको परमेश्वर कबीर जी मिले जैसे पीपा जी , धन्ना भगत जी , रविदासजी घिसा दास जी आदि ।

तो दोस्तों इस वीडियो को देखकर आपको पता चल ही गया होगा कि किस प्रकार परमात्मा प्रत्येक युग में हमारे लिए, हम जीवो के उद्धार के लिए प्रकट होते हैं। उनका बार बार अवतार लेने का कारण यही है कि वे हमारे परमपिता हें और हमे सच्चा ज्ञान व भक्ति देकर पुनः उस सुखमय स्थल पर लेकर जाना चाहते हैं जहां से हम गलती करके यहां काल लोक में आ गए हे ,
🔺 दोस्तों इन सभी महापुरुषों को परमेश्वर कबीर जी मिले तथा सतलोक दिखाकर वापस छोड़ा । जिसके बाद उन्होंने परमेश्वर कबीर जी के वचन पर डटकर भक्ति की ।

अतः आप सब से भी हम निवेदन करना चाहेंगे कि वर्तमान में पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब जी के अवतार रूप में सन्त रामपाल जी महाराज आये हैं। और वही सत्यज्ञान जो कबीर साहेब जी बताया करते थे , सन्त रामपाल जी महाराज बता रहे हैं । प्रभु प्रेमी आत्मा इस ज्ञान को स्वीकार करे । मानव जाति के लिए सन्त रामपाल जी महाराज द्वारा दिया गया ज्ञान अनमोल खजाना है।

दोस्तों हम से जुड़े रहने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद अब लास्ट में परमात्मा कबीर साहेब जी की एक वाणी के साथ हम इस वीडियो का समापन करते हैं।

कबीर , जो जन हमारी शरण है , ताका हूं मैं दास ।
गेल गेला लागया फिरुं , जब तक धरती आकाश ।।
{.गुरु जी की आवाज़ में }

दोस्तों हमेशा से हमारे यही उद्देश्य रहता है कि हम आपको आपके पवित्र शास्त्रों से अवगत कराएं। उन में छुपे हुए गुढ रहस्यो को उजागर करें। आज इस वीडियो के माध्यम से भी हम यही बताना चाहते हैं कि पूर्ण परमात्मा प्रत्येक युग में आते हैं और उसकी गवाही हमारे सद ग्रंथ देते हैं।